SJIF 2013 = 1.795
An International Peer Reviewed & Referred
Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

वर्तमान संदर्भ में उच्च ि ाक्षा की द ा एवं दि ा

डॉ0 पुश्पा देवी सेठ, Associate Prof. Deptt. of Education Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi

डॉ0 वि ाखा भाुक्ला, Assistant Prof. Deptt. of Education Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi

Abstract

ि ाक्षा भारत की आर्थिक प्रगति के लिए ही नहीं बल्कि सामाजिक स्थिरता के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। अमीर व गरीब के मध्य बढ़ती दूरी, युवा वर्ग से उनके माता पिता की बढ़ती अपेक्षाएँ, भौगोलिक अंतर अत्यधिक है, साथ ही सामाजिक विभिन्नताएँ और ि ाक्षा में असमानता भी गम्भीर समस्या है। इन समस्याओं को संदर्भ में लेते हुए इस पंचवर्शीय योजना (2012–17) में केन्द्र सरकार ने ि ाक्षा में श्रेश्ठता, समानता और प्रसार पर जोर दिया है। प्रस्तुत प्रपत्र में भारत में उच्च ि ाक्षा की वर्तमान स्थिति को दृश्टिगत करते हुए भविश्य का मार्ग प्र ास्त किया गया है।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com 4.194, 2013 SJIF© SRJIS2014

दे ा में स्थायी प्रगति व उन्नति के लिए आर्थिक, राजनीतिक व संस्कृतिक समानता अति आव यक है। समाजवादी समाज ही भाोशण से मुक्त वैज्ञानिक दृश्टि वाले परिपक्व समाज की रचना को प्रेरित कर सकता है। स्वतंत्रता से पूर्व समाज सुधारकों, स्वामी विवेकानन्द दयानन्द सरस्वती, महात्मा गांधी ने इस दि ा में प्रयास किये इनका दृढ़ वि वास था कि ि ाक्षा ही ज्ञान का द्वार खोल सकती है, समाजिक प्ररिवर्तनों का मार्ग प्र ास्त कर सकती है। डॉ0 अम्बेडकर का विचार था कि– ''भारत के प्रत्येक बच्चों को एसी गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक ि ाक्षा मिले जिसका उपयोग वह व्यवहारिक जीवन में कर सके। इसी

तरह उच्चि ाक्षा सामाजिक परिवर्तन का प्रमुख अस्त्र बन सकती है। उच्च ि ाक्षा वैज्ञानिक सोच वाले आत्मनिर्भर नागरिक बनाने में सहायक हो सकती है।

वस्तुतः उच्च ि ाक्षा वि ि ाश्ट ज्ञान की पुश्टी करती है। नये ज्ञान का सृजन करती है व समाज को नयी दि ाओं में ले जाने व प्रगति को आगे बढ़ाने में सहायक होती है। उच्च ि ाक्षा मात्र ज्ञान के प्रसार का माध्यम नहीं होनी चाहिए, वरन भाोध व अनुसंधान द्वारा नये ज्ञान सृजन, विद्यमान ज्ञान के नये–नये उपयोग, समाज की सभी प्रकार की समस्याओं के निवारण

के उपाय बताने में समर्थ होनी चाहिए। तब ही उच्च ि ाक्षा प्रगति व सम्पन्नता का वाहक बन सकती है। किंतु क्या भारत की वर्तमान ि ाक्षा प्रणाली इन उद्दे यों की पूर्ति करती है। इस पर विचार करना होगा। दरअसल भारत में ि ाक्षा सरकार का दायित्व समझी जाती है। सस्ती सुलभ व गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक से उच्चि ाक्षा की व्यवस्था राज्य का दायित्व समझी जाती है।

हालांकि इसी दे ा में प्राचीन काल में ि ाक्षा स्वायत्त रही है। किंतु अंग्रेजी भाासन के दौरान ि ाक्षा पूर्णतः राज्याश्रित हो गयी। जबकि आद र्ा रूप में ि ाक्षा स्वायत्त और आत्मनिर्भर होनी चाहिए। जिससे समाज की सेवा आकांक्षाओं के अनुरूप इसे ढाला जा सके। लेकिन सरकारी नियंत्रण व वित्तपोशणवाली ि ाक्षा मात्र निर्दे ात्मक बन जाती है और राजकीय व्यवस्था की सारी कमियॉ उसमें समाहित हो जाती है। यही कारण है कि राज्याश्रित ि ाक्षा व्यवस्था वित्तीय संसाधनों के अभावों से जूझते हुए चल रही है और इसमें नये प्रयोग, नवाचार, राज्य निर्दे ि ात है।

भारत की वर्तमान ि ाक्षा व्यवस्था अनेक कमियों एवं व्याधियों से युक्त है। आज यदि दे ा के 200 केन्द्रीय वि ववविद्यालयों, आई.आई.टी., आई.आई.एम. जैसे ि ाक्षण संस्थानों को छोड़ दिया जाय, तो संपूर्ण उच्च ि ाक्षा ही अर्धचेतनावस्था में है। भौक्षिक सुधारों में कोई प्रगति नहीं है। ि ाक्षकों और छात्रों के अनुपात में भारी अंतर है। ि ाक्षा में समाज की भागीदारी न्यूनतम रूप में है, ऐसे में ि ाक्षा के उद्दे य कैसे प्राप्त हो, यह एक विचारणीय बिन्दु है। जबकि वै ि वक भौक्षिक प्रतियोगिता का महत्वपूर्ण भागीदार बनने के लिए गुणवत्तापूर्ण ि ाक्षा व्यवस्था अपरिहार्य है। वस्तुतः समृद्ध दे ाों की सफलता का एक बड़ा कारण वि वस्तरीय उच्चि ाक्षा ही है। अमेरिका, चीन, जापान, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, दक्षिण कोरिया, ताईवान, सिंगापुर, मले ि ाया, हांगकांग, आस्ट्रेलिया आदि दे ाों की आर्थिक उन्नति उनकी वि वस्तरीय उच्चि ाक्षा के ही कारण है। हालांकि स्वतंत्रता प चात् भारतीय ि ाक्षा क्षेत्र में मात्रात्मक या संख्यात्मक प्रगति काफी हुई है। ि ाक्षा से भौतिक समृद्धि का पक्ष अनेक क्षेत्रों में दृश्टव्य है। लेकिन वर्तमान परिदृ य में सिद्धान्तहीन भौक्षिक अवधारणा और उद्दे यहीन दि ा की द ा वि ोशतः उच्चि ाक्षा की दृश्टव्य

चुनौतियॉ है। उच्चि ाक्षा की खेती का उत्तरदायी उत्पादन जारी है। आज हमारे दे ा में 16 आई.आई.टी. , 30 एन.आई.टी. , 359 महत्वपूर्ण तकनीकि संस्थान एवं हजारो इंजीनियरिंग संस्थान हैं। फिर भी अन्तर्राश्ट्रीय स्तर पर टॉप दो सौ वि वविद्यालयों में कोई भी भारतीय संस्थान नहीं है। जबकि कुछ द ाक पूर्व भारत और चीन ि ाक्षा के क्षेत्र में समान थे। किंतु आज उच्चि ाक्षा एवं तकनीकी ि ाक्षा के क्षेत्र में भारत चीन से पिछड़ चुका है। गत् 20 वर्शो में चीन के बीजिंग, सिंहुआ, भांघाई, जिओटांग, भूडान आदि के वि वविद्यालय अन्तर्राश्ट्रीय पहचान बना चुके है। जिनकी वि व रैंकिग है। यह सर्वविदित है कि आर्थिक सर्वश्रेश्ठता बेहतर तकनीकी ि ाक्षा, भाोध और विकास पर निर्भर है। किंतु भाोध और विज्ञान क्षेत्र में पेटेंट मामले में भारत में कोई उत्तरोत्र विकास नहीं दिखता।

यहॉ 400 वि वविद्यालय एवं डीम्ड वि वविद्यालय है किन्तु यहॉ मात्र प्रति वर्श 5 हजार छात्र ही भाोध कर पी.एच.डी. उपाधि प्राप्त करते है। जबकि अमेरिका, चीन में क्रम ाः 25 हजार एवं 35 हजार छात्र प्रतिवर्श पी0एच0डी0 करते हैं। आज भारत को 538 वि वविद्यालय एवं 26,478 उच्चि ाक्षण संस्थानों में पढ़ने वाले 160 करोड़ छात्रो का वैि वक औसत मात्र 12 प्रति ात है। हालांकि केन्द्र सरकार वर्श 2020 तक इसे 30 प्रति ात तक बढ़ाना चाहती है। लेकिन उल्लेखनीय है कि गत् तीन द ाकों में उच्च ि ाक्षा को बढ़ावा देने के नाम पर खुले निजी ि ाक्षण संस्थान मानकहीन एवं स्तरहीन है। यहॉ तक कि वर्तमान समय में भारत में 153 वि वविद्यालयों एवं 9875 महाविद्यालयों में ि ाक्षक छात्र अनुपात, वित्तीय अनुदान, कमरे प्रयोग ाालाएं, पुस्तकालय जैसी बुनियादी सुविधाएं भी नहीं है। राश्ट्रीय ज्ञान आयोग ने भी अपनी प्रस्तुत रिपोर्ट में उच्च ि ाक्षा के बुनियादी संकटों पर चिंता व्यक्त की थी। उच्चि ाक्षा के साथ ही तकनीकी ि ाक्षा में भी खामियां है। उच्चि ाक्षा को संचालित करने के लिए यूजीसी है। इसी प्रकार तकनीकी ि ाक्षा को अखिलभारतीय तकनीकि ि ाक्षा परिशद एआइसीटीई संचालित करती है। यद्यपी दे ा में तकनीकी संस्थान तो बहुत है लेकिन अच्छी ि ाक्षा और रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने वाले संस्थानों की भारी कमी है। फलतः इंजीनियरिंग करके भी छात्र 20 हजार की अदद नौकरी के लिए भटक रहे है। इस समय दे ा के 13 हजार तकनीकी संस्थानों से छात्र इंजीनियरिंग व मैनेजमेंट की ि ाक्षा प्राप्त कर रहे है। अभी हाल में ही गठित नई सरकार के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'स्किल इंडिया' की बात कही है। यानि हर छात्र तकनीकी, विज्ञान के माध्यम से उत्तम ि ाक्षा प्राप्त करें। साथ ही प्रधानमंत्री का कहना है कि हमारी ऐसी उच्च ि ाक्षा व्यवस्था एवं प्रि ाक्षण व्यवस्था हो, कि भारत वि व को उत्तम ि ाक्षक दे सकें। इसके लिए भारत के पास मानवीय भाक्ति भले ही अधिक हो, किन्तु संसाधनों की भारी कमी है। वर्श 2020 तक 5 करोड़ छात्रों को उच्च ि ाक्षा की आव यकता होगी। अभी ि ाक्षा क्षेत्र में दे ा के बजट का साढ़े तीन फिसदी ही खर्च होता है। जिसे बढ़ाकर 8 फिसदी करने की मांग है। उच्चि ाक्षा क्षेत्र में वित्तीय

संसाधन जुटाने के साथ ही ि ाक्षा एवं भाोध स्तर को भी उॅचा उठाना होगा। अधिक से अधिक युवा उच्चि ाक्षा प्राप्त कर सकें इसके लिए डिस्टेंस व ऑनलाइन एजुके ान को बढ़ावा देना होगा। सर्वप्रथम 1962 में दिल्ली वि वविद्यालय से दूरस्थ ि ाक्षा का प्रारम्भ हुआ था। आज 250 से अधिक दूरस्थ ि ाक्षण संस्थान के माध्यम से 40 लाख छात्र ि ाक्षा प्राप्त कर रहे है। इस तरह दूरस्थ ि ाक्षा के द्वारा 22 फिसदी छात्र लाभान्वित हो रहे है। सन् 1982 में हैदराबाद में बी.आर. अम्बेडकर ओपन यूनिर्वसिटी एवं सन् 1985 में इंदिरा गांधी ओपेन यूनिवर्सिटी बनी। वर्श 2010 में माधव मेनन कमेटी ने दूरस्थ ि ाक्षा अधिकारों व कार्यो पर टिप्पणी की, फलतः मई 2013 में दूरस्थ ि ाक्षा परिशद को भंग कर यूजीसी में अलग से डिस्टेंस एजुके ान ब्यूरो बना दिया गया। इसके साथ ही दस ि ाक्षको एवं आधारभूत संरचना की कमी, ि ाक्षण संस्थाओं का गुणवत्तापूर्ण मूल्यांकन ढांचा एवं तकनीकी ि ाक्षण संस्थाओं की कमी को पूरा करने के लिए अभी हाल ही में राश्ट्रीय उच्चतर ि ाक्षा अभियान (रूसा) प्रारंभ किया गया है। स्वतंत्रता प चात् उच्च ि ाक्षा के विस्तार एवं सुधार क्षेत्र में राश्ट्रीय उच्चतर ि ाक्षा अभियान को पहला बड़ा प्रयास माना जा रहा है। इसके अर्न्तगत सभी प्रदे ा से राज्य, उच्चि ाक्षा परिशद गठित करने और राज्य उच्चि ाक्षा आयोग बनाने को कहा गया है। इसी राश्ट्रीय उच्चि ाक्षा अभियान के तहत 12वीं पंचवर्शीय योजना में 22,853 हजार करोड़ रूपये का अनुदान मिला है। यह अभियान केन्द्र और राज्यों के बीच 65:35 प्रति ात हिस्सेदारी के आधार पर आगे बढ़ाया जायेगा। साथ ही उच्चि ाक्षा की गुणवत्ता के संदर्भ में इसके प्रबंधन, निगरानी, भाोध, मूल्यांकन की तैयारी के लिए 2.24 करोड़ रूपये जारी किये गये है। वि वस्तरीय संस्थान बनाने के लिए उच्चि ाक्षा में ऐसी राश्ट्रीय नीति की जरूरत है, जो गुणवत्ता, पारदि ार्ता, जवाबदेही, स्वायत्ता, विकन्द्रीकरण, पारदि ार्ता, विविधता और वि वदृश्टि जैसे मूल्यों पर आधारित हो। साथ ही छात्रों को ऐसी वैज्ञानिक, तकनीकी ि ाक्षा–ज्ञान मिले जो व्यावहारिक एवं रोजगारपरक हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

संपादकीय – अतुल कोठारी राश्ट्रीय ि ाक्षा भारतीय संकल्पना, अ0भा0वि0 दिल्ली, 2003 पृ0 41

संपादकीय – अतुल कोठारी राश्ट्रीय ि ाक्षा भारतीय संकल्पना, अ0भा0वि0 दिल्ली, 2003 पृ0 31

दैनिक जागरण, संपादकीय 15 अप्रैल 2013

अमर उजाला, संपादकीय 7 फरवरी 2014

दैनिक जागरण, 9 मार्च 2013

संपादकीय, सिंह माया ांकर अध्यापक ि ाक्षा

असमंजस में, अध्ययन पब्लि ार्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स दिल्ली 2007, पृ0 157